कृषि विज्ञान केंद्र, दिल्ली

(राष्ट्रीय बागवानी अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान)

नेफेड कॉम्प्लेक्स, उजवा, नई दिल्ली – 110 073 Ph. 9667971155

E-mail: kvkujwa@yahoo.com, Website: www.kvkdelhi.org

वैज्ञानिक कृषि सलाह

अमरूद (Guava) में फल मक्खी (Frut fly) का नियंत्रण

(जुलाई - सितम्बर, 2025)

उत्तरी भारत में बागवानी फसलों का क्षेत्रफल लगातार बढ़ता जा रहा है जिनमें मुख्यतः अमरूद, किन्नू, आम, आडू, नाशपाती, नींबू व मौसमी इत्यादि है। फल वाली फसलों को विभिन्न प्रकार के कीट नुकसान पहुंचाते हैं इनमें मुख्य रूप से फल मक्खी का आक्रमण सबसे ज्यादा होता है। वर्षा ऋतु में फल मक्खी का आक्रमण काफी ज्यादा बढ़ जाता है। यह अमरूद की फसल में 90 प्रतिशत तक नुकसान कर सकती है।

फल मक्खी की मुख्यतः दो प्रजातियां नुकसान करती हुए पाई जाती हैं जोकि **बैक्टरोसेरा डोरसलिस** व **बैक्टरोसेरा जोनाटा** है। फल मक्खी के प्रौढ **मार्च-अप्रैल** से शुरू होकर **नवम्बर-दिसम्बर** तक विभिन्न फसलों को नुकसान करते हुए पाए जाती हैं। फल मक्खी पूरे साल सक्रिय रहती है और यह एक बागवानी फसल से दूसरी व दूसरी से तीसरी फसलों में अपना जीवन चक्र पूर्ण कर निरंतर नुकसान करती रहती है।

पहचान व नुकसान करने का तरीकाः इस मक्खी के प्रौढ घरेलू मक्खी से छोटी व पंख सुनहरे भुरे रंग के होते हैं। मादा मक्खी फलों की उपरी सतह के नीचे अंडे देती है जिनमें कुछ दिनों बाद चावल के दाने जैसे आकार वाले सफेद रंग के कीड़े पनपते हैं जोकि फल को गला देते हैं। अंडे दिए गई जगह पर गहरे हरे रंग के दबे हुए धब्बे फल की सतह पर दिखाई देते हैं। कुछ दिनों बाद ग्रसित फल नीचे गिर जाने से यह कीट मिट्टी के संपर्क में आने से अपना जीवन चक्र पूर्ण करता है।

इस कीट की मादा फलों में छिलके के अन्दर अंडे देती हैं और शिशु फल के अन्दर रहकर फल को गला देते हैं इसलिए फल मक्खी के नियंत्रण में कीटनाशकों की भूमिका ज्यादा नहीं पाई जाती। इसलिए पर्यावरण हितैशी तकनीकों को वैज्ञानिक तरीकों से अपनाकर इसके प्रकोप को काफी कम किया जा सकता है।

नियंत्रण एवं सावधानियां :

1. खेत की जुताई 15-20 दिन के अंतराल पर करते रहें, ताकि मिट्टी में छिपे फल मक्खी के कीड़े व प्यूपा नष्ट हो जाएं।
2. नीचे गिरे हुए फल मक्खी ग्रसित फलों को प्रतिदिन या एक दिन छोड़कर इक्कठा करें व जमीन में 2 फुट गहरा गढ्ढा खोदकर उसमें दबा दें या इन फलों को थैलों में भर कर थैले का मुहं बांध दें और 10-15 दिन के बाद अलग गढ्ढा खोदकर दबा दें ताकि कीड़े अपना जीवन चक्र पूरा न कर पाएं ।
3. इस कीट के नियंत्रण के लिए 14-16 फल मक्खी ट्रैप (Fruit fly trap) जुलाई के पहले सप्ताह से अमरूद के बाग में लगा सकते हैं।
4. यह ट्रैप पेड़ की टहनी के ऊपर 1-1.5 मीटर की उंचाई पर टांगने चाहिए। इन ट्रैप को 30-35 दिन बाद दोबारा रिचार्ज कर सकते हैं। ध्यान रहे कि ट्रैप को टहनी पर वहां लगाया जाए जहां पर धूप कम आती हो ।
5. बागवानी फसलों में ट्रैप लगाने से फल मक्खी के नर कीट ट्रैप में फंस कर मर जाते हैं और प्रजनन क्रिया कम होने से इस कीट की संख्या घट जाती है इसलिये इन्हें ट्रैप द्वारा पकड़ना प्रभावी रहता है ।
6. बाग में ट्रैप के साथ-साथ नीम आधारित कीटनाशकों का 5-10 मि.ली. / लीटर पानी में मिलाकर 15-20 दिन के अन्तराल पर प्रयोग कर इस कीट का प्रकोप काफी कम किया जा सकता है ।
7. ज्यादा प्रकोप होने पर फ्लुबेंडियामाइड (90 SC) + डेल्टामेथ्रिन (60 SC) को 0.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी **या** आइसोसाइक्लोसरम 9.2% (w/w DC) + आइसोसाइक्लोसरम 10% (w/v DC) को 0.5 मिलीलीटर प्रति लीटर के हिसाब से छिड़काव करना चाहिए।

फल मक्खी

फल गलन

फल मक्खी ट्रैप

फल मक्खी ग्रसित फलों का एकत्रीकरण कर मिट्टी के गढ्ढे में दबाना

इसके अतिरिक्त अधिक समस्याएं होने पर नजदीक **कृषि विज्ञान केन्द्र** एवं **कृषि अधिकारियों** से सम्पर्क करें।

स्त्रोतः कीट विज्ञान विभाग, चौ.च.सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

वरिष्ठ वैज्ञानिक सह-अध्यक्ष

कृषि विज्ञान केंद्र, दिल्ली